शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में सामाजिक युगबोध

प्रियंका वर्मा
डॉ. परमेश्वर दत्त शर्मा शोध संस्थान
श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

सामाजिक युगबोध का समाज से अंतरंग संबंध है। एक ऐसा समाज जिसमें सभी वर्ग अमीर, गरीब, ब्राह्मण, दलित ओर सभी प्रकार की संस्कृति और धर्म के लोग रहते हैं। समाज शब्द अपने आप में एक विशाल आशय समेटे हुए है। विभिन्न समुदायों से मिलकर ही समाज का निर्माण होता है। इन समुदायों की अपनी समस्याएँ व मर्यादाएँ हैं। इन्ही समस्याओं का उपन्यास में यर्थाथ परक विवेचन सामाजिक युगबोध कहलाता है। सामाजिक युगबोध में सामाजिक भावों की व्यंजना होती है। इसमें न केवल निम्नवर्ग की समस्याओं व आर्थिक पहलुओं पर प्रकाश डाला है बल्कि समाज से जुड़ी अन्य वर्गों की समस्याओं को पूर्णतः अभिव्यक्त किया जाता है। उपन्यासकार की सृष्टि में समाज कल्याण व व्यक्ति के विकास की भावना निहित होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में सामाजिक युगबोध की पड़ताल की गयी है।

सामाजिक युगबोध

सामाजिक युगबोध में सामाजिक यथार्थ और वैयक्तिक यथार्थ का परस्पर संबंध है। व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है और उसका एक छोटा सा अंग है। उसे पृथक नहीं किया जा सकता है।

सामाजिक युगबोध का संबंध सामाजिक जीवन से है। अरस्तु के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से बाहर मनुष्य या तो पशु होगा या देवता। समाज व व्यक्ति एक सिक्के के दो पहलु हैं। सामाजिक युगबोध के अंतर्गत सामाजिक जीवन का अस्तित्व अनिवार्य है। समाज में घटित हो रही घटनाओं को कथाकार जिस सच्चाई के साथ अपनी कृति में उल्लेखित करता है, उसे ही सामाजिक युगबोध कहा जा सकता है। इस संबंध में डॉ.सुषमा धवन कहती हैं, "सामाजिक उपन्यास कला की आधारभूत विचारधारा व्यक्ति चिंतन से संबंध न होकर समाज मंगल की भावना से अनुप्रेरित है। इस जीवन दृष्टि के फलस्वरूप सामाजिक उपन्यास की निजी विशेषताएँ हैं और उसका विशिष्ट-सा है।"[1]

अपनी कृतियों में आज के सामाजिक यथार्थ को कलात्मक भंगिमा प्रदान करने वाली चित्रा मुद्गल मूर्धन्य रचनाकार हैं। उनके साहित्य का मूल स्वर समाज की सामूहिक भवना के भीतर से व्यक्त होता है। प्रत्येक युग में मानव-संस्कृति सभ्यता, धारणाओं और मान्यताओं में परिवर्तन का क्रम अक्षुण्ण रहता है। किसी भी रचनाकार के साहित्य के मूल्यांकन से पूर्व युगीन परिस्थितियों पर दृष्टि डालना आवश्यक है। जब हम अपने वर्तमान पर विचार करते हैं तो पाते हैं भारत में सन् साठ के बाद सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक स्थितियों में बहुत

बदलाव आया है। इस बदलाव को चित्राजी ने अपने उपन्यासों में दर्शाया है।

नयी पुरानी पीढ़ी में संघर्ष : चित्राजी के उपन्यासों में नयी-पुरानी पीढ़ी का संघर्ष स्पष्ट है। कहीं पुरानी पीढ़ी आक्रोश से भरी दिखाई देती है तो कहीं समझौतावादी बनकर नियति के हाथों पिट गयी है। युवा पीढ़ी के सामने विवश, अंतर्द्वंद्व एवं संघर्ष करते हुए नजर आती है। पुरानी पीढ़ी परम्परागत मूल्यों में अधिक आस्था रखती है। नयी पीढ़ी पुरानी पीढी का विरोध करती है। 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में पीढ़ियों के संघर्ष का चित्रण है। उपन्यास में अंकिता नयी पीढ़ी का व उसकी माँ पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। अंकित की माँ परम्परागत मूल्यों में अधिक आस्था रखती है। वह उन्हीं मूल्यों को अपनी संतान में देखना चाहती है जो बड़े-बूढ़ों से विरासत में मिले हैं।

उपन्यास में अंकिता विज्ञापन जगत में काम करने वाली एक स्वाभिमानी लड़की है जो शहर से अपने घर कुछ दिनों के लिए आती है तो अम्मा के आदेश पर नाउन काकी उसके पाँव पखारती है, लेकिन नयी पीढ़ी की अंकिता को यह सब अच्छा नहीं लगता। वह अम्मा से बहस करती है। "अम्मा से घोर तर्क-वितर्क होता है। सामंती रीति-रिवाज है ये खत्म होने चाहिए अब लज्जा आती है मगर अम्मा टस से मस न होती यह तो नाउन का नेग है।"[2] अम्मा पुराने खयालात की थी। वे कहती "नाउन से पाँव पखारने में उसे आपत्ति हो तो वे स्वयं पखारेंगी। नहीं तो घर की बहुएँ ये आदर भी नहीं है। वैज्ञानिक कारण भी है इस परम्परा के पीछे।"[3]

चित्राजी के उपन्यास गिलिगडु में बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा, बदलती विचारधारा, पूर्वजों को सम्मान नहीं देना, उन्हें अपमानित करना आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है तथा साथ ही नयी पीढ़ी की निर्ममता और दुर्व्यवहार को भी स्पष्ट किया है। उपन्यास में बुजुर्ग जसवंतसिंहजी की सारी संपत्ति कानपुर में है इन सबको बेचने की चाह उनका बेटा नरेन्द्र रखता है तथा बेटी की भी यही इच्छा है कि आभूषण, माँ की साड़ियाँ भी बांट ली जाए तथा पिता को वृद्धाश्रम में रख दिया जाए तथा बेटी तो यह भी कहती है कि बाबूजी का भैया-भाभी के साथ रहना उनके आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न कर रहा है। बाबूजी न स्वयं सहज होकर पा रहे, न भैया-भाभी को ही जीने दे रहे। पति-पत्नी के परस्पर समझ की जमीन तड़क रही है।"[4]

नारी जागरण

नारी को जहाँ भी अवसर मिला वह अपनी क्षमता सूझबूझ, शक्ति तथा कर्तव्यनिष्ठा का पूर्ण परिचय देते हुए समस्त क्षेत्रों में देश के नवनिर्माण में आगे आयीं हैं और पुरुष के समकक्ष कहीं तो उनसे भी अधिक विकास की प्रक्रिया में योगदान दे रही हैं और यह सब स्वयं महिला की आत्म जागृति के कारण हुआ है।

चित्रा मुद्गल ने भी नारी के प्रति समाज की परम्परागत विचारधारा से लेकर नवीन विचारों, परिस्थितियों तथा स्वयं नारी की मनः स्थितियों, दृष्टिकोणों तथा परिवर्तित भूमिका को स्पष्ट किया है। आज महिला का स्वरूप बदला है। नारी ने पुरानी परम्परागत भूमिकाओं के स्थान पर नयी भूमिका को अपनाया और उसमें सफल भी रही। परिवारिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सामाजिक क्षेत्र में भी जाग्रत व विकसित व्यक्तित्व दिखाई देता है।

पुराने समय में नारियों का घर की दहलीज पार करना मुश्किल था, लेकिन आज नारी पुरुष के समकक्ष खड़ी है ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां नारी

कार्य न करती हो। ऐसे ही कुछ विचार चित्राजी के उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में मिलते है। जिसमें विज्ञापन जगत में करने वाली स्वच्छन्द विचारधाराओं से परिपूर्ण दो नारियों का उल्लेख है। उपन्यास में अंकिता-सुधांशु रजिस्टर्ड मैरिज करते हैं, लेकिन अंकिता की इच्छाओं और स्वातन्त्रय का हनन हुआ। सुधांशु विव्ह के बाद अंकिता की भावनाओं, उसकी इच्छाओं की कद्र नहीं करता। उसके द्वारा लिखी कविताओं को फाड़ कर चिंदियाँ कर दी थी उसने। अपने अस्तित्व को नष्ट होते देख अंकिता सुधांशु से अलग होती है। इस बीच उसका गर्भपात भी होता है। अफसोस करने के बजाय वह सबंधों की शिथिलता के एहसास को इस तरह बयां करती है। "मेरे लिए उसका मरना मेरी जिन्दगी भर मुझे तुमको ढोना पड़ता, क्योंकि वह हमारा बच्चा नहीं था। तुम्हारी कामुकता का परिणाम था, मुझे तुमसे घृणा है, तुम्हारी एय्याशियों और ज्यादतियों को ... सती साध्वी बनी मांग से सजाएं इस मुगालते में मत रहना कि मैं स्त्रीत्व की पूर्णता के भ्रम में जीती रहूंगी। लो इसी वक्त यह रिश्ता खत्म।"[5] चित्राजी नारी जागरण के संबंध में कहती हैं, "स्त्री की क्षमता को देह से ऊपर उठकर स्वीकार न करने वाले रुढ़-रुग्ण समाज का बोध कराना आखिर किन कंधों का दायित्व होगा।"[6] चित्राजी ने 'आवां' में जागृत नारी के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। उपन्यास में किशोरीबाई की बेटी सुनंदा सुहैल नामक मुस्लिम लड़के से प्रेम करती है तथा उसके बच्चे की माँ बनने वाली है। सुहैल अपने घर वालों को शादी के लिए राजी तो कर लेता है, लेकिन उनकी एक शर्त रहती है कि सुनंदा को इस्लाम कबूल करना होगा। लेकिन सुनंदा का साहसी व्यक्तित्व इस बात से इनकार कर देता है। वह कहती है "मैं ओरों की सुख संतुष्टि के लिए अपना सच छोड़ दूँ या अपने स्व के संरक्षण के लिए उसके उगने को देह धरने दूँ, उसे एक पूरी की पूरी काया ग्रहण करने दूं, सुहैल ने प्रेम करने के समय तो कोई शर्त नहीं रखी, ब्याह करना होगा तो उससे नहीं इस्लाम से करना होगा या उसे हिन्दुत्व से?"[7] लेखिका का मानना है कि स्त्री को अपने अस्तित्व का बोध स्त्री बनकर ही करना होगा, मर्द बनकर नहीं। स्त्री को स्त्रीत्व से मुक्ति नही चाहिए बल्कि उन रुढ़ियों से मुक्ति चाहिए जिन्होंने उसे वस्तु बना दिया है।"[8]

दाम्पत्य जीवन

आज के वर्तमान युग में दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। पहले पुरुष दाम्पत्य जीवन प्रमुख माना जाता था और नारी गौण, परंतु आज स्त्री-पुरुष समानता का नारा लगाया जा रहा है। लेकिन बढ़ती स्वार्थवृत्ति, आत्मकेन्द्रियता आदि के कारण संबंधों में मात्र व्यवहारिकता आ रही है। परिणाम स्वरुप दाम्पत्य संबंध विघटित होते दिखई दे रहे हैं। लेखिका के उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नीता महत्वाकांक्षी लड़की है। वह आधुनिक विचारधारा रखती है। वह शादीशुदा सुधीर के संग रहने लगती है। नीता के परिवार वाले विरोध करते हैं, तब नीता कहती है, "वास्तविक अर्थों में अर्चना उसकी पत्नी होती तो वह परस्त्री में साथ ढूंढता। आकर्षित होना अलग बात है, साथ ढूंढना, वह असंतुष्टित है अनुपलब्धि है बोध है जिसकी सघन ललक उसे अनायास मेरी ओर खींच लाई है।"[9] यहाँ सुधीर व उसकी पत्नी अर्चना के दाम्पत्य जीवन की कटु सच्चाई है उनके परस्पर संबंधों में तनाव की वजह से सुधीर अर्चना को छोड़ नीता के संग रहने लगता है। 'आवां' में लेखिका ने गौतमी व उसके पति के दाम्पत्य

जीवन में कटुता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। गौतमी अपने पति को सामान का दर्जा देती है। गौतमी की पति के प्रति नकारात्मक विचाराधारा है। वह कहती है, "जिस तरह घर में अलमारी है, फ्रिज है, वाशिंग मशीन है, डिशवाशर है। जितना वो मेरे लिए काम आती है, बदले में मैं उनकी देखभाल करती हूँ। अशोक के साथ भी मेरा वही रिश्ता है। शेष मै क्या हूं कहां जाती हूं, कोई मतलब नहीं उससे। घर मेरा है।"[10]

कुरीतियों व रुढ़ियों का विरोध

चित्राजी ने अपने स्वयं के जीवन में परम्पराओं का विरोध किया। जो स्त्री के विकास में बाधक थी उसी बात को वे अपने पत्रों के चरित्र में उतार देती हैं। 'आवां' उपन्यास में नमिता के पिता की मृत्यु के समय जब उनके क्रिया कर्म करने की बात आती है, तो वह दायित्व नमिता स्वयं उठाने का निर्णय लेती है। उसके निर्णय का विरोध उसकी मां और समाज के अन्य प्रतिष्ठितजन करते हैं। "बौरा गई है नक्कटी! बेटियां उनके भी जिनके सपूत नहीं होते, पितिआउन भाई-भतीजे उन्हें मुखाग्नि देते हैं! जे आज तक न हुआ, अब कैसे होगा।"[11] लेकिन ताई उस समय अनिता का साथ देती है व कहती है, "जो कभी नहीं हुआ, वह हो ही नहीं सकता जरूरी नहीं। रुढि टूटनी ही चाहिए।"[12] इसी उपन्यास में विमला बेन सुनंदा की हत्या हो जाने पर उसकी मय्यत को कंधा देने के लिए आगे आती है तब भीड़ मे से आवाज आती है स्त्रियों का कंधा देना शास्त्रसम्मत नहीं। तब वह प्रत्युत्तर में कहती है, "कूपमंडूक पुरुषों से हमें सीखना होगा कि स्त्रियों के लिए क्या शास्त्र सम्मत है क्या नहीं ? निर्दोष स्त्री की नृशंस हत्या करना सम्मत है।"[13] वह साथ में यह भी कहती है, "मैं कंधा किसी औरत की मय्यत को नहीं दे रही उस स्त्री चेतना को दे रही हूं जिसकी गला घोंटने की कोशिश हत्या के बहाने हुई है! मैं हर जाति, धर्म वर्ण की स्त्रियों का आह्वान करती हूँ कि वे सबकी सब श्मशान चलें और बारी-बारी से सुनंदा की मय्यत को कंधा दें।"[14]

निष्कर्ष

साहित्य समाज की गतिविधियों और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के साथ-साथ एक सामाजिक प्रक्रिया भी है। युग के घटनाक्रम और वैचारिक मान्यताएँ साहित्य में ही प्रतिफलित होती हैं। चित्राजी के उपन्यासों में सामाजिक परिवेश के विविध स्तर और स्वरूप जीवन्त है। ग्रामीण चित्रण से लेकर महानगरीय अंचल तक, श्रमिक संगठनों से लेकर वृद्धों की उपेक्षाओं तक, परम्पराओं में बंधी ग्रामीण सरलता से लेकर आधुनिक जीवन मूल्यों तक सभी कुछ बड़े ही ठोस प्रामाणिक और रचनात्मक धरातल पर बड़ी ही कुशलता से मुखरित हुआ है।

संदर्भ सूची

1. *हिन्दी उपन्यास, डॉ.सुषमा धवन, पृष्ठ 9*
2. *एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 167*
3. *वही*
4. *गिलिगडु, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 96*
5. *एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ.19*
6. *चित्रा मुद्गल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. करुणा शर्मा, जनपथ, पृष्ठ 79*
7. *आवां, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 12*
8. *चित्रा मुद्गल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. करुणा शर्मा, पृष्ठ. 77*
9. *एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 212*
10. *आवां, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 367*
11. *वही, पृष्ठ. 399*
12. *वही, पृष्ठ 400*
13. *वही*
14. *वही*